NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX- A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No: 2581 - 4230
VOLUME 8, ISSUE 8, Aug. -2022

Pinki Bala W/o Ved Parkash Yadav
VPO-Khatod
Distt.-Mahendergsrh ,Haryana

वीरेन्द्र जैन रचित कहानी संग्रह 'भार्या' का शिल्पगत आयाम

सार

किसी भी कृति के शिल्पगत आयाम उसकी विधा के अनुसार होते हैं । काव्य के शिल्पगत आयामों में जहां विषय, भाषा,शैली, कल्पना रीति, छन्द, अलंकार, प्रकृति चित्रण, बिम्ब, प्रतीकों का महत्व है वहीं कहानियों के शिल्पगत आयामों में उनका कथानक, परिवेश, पात्र भाषा, शैली, उद्देश्य आदि तत्वों को शामिल किया जाता है । 'भार्या' के शिल्पगत आयामों में उसका कथानक परिवेश, पात्र संवाद–योजना, भाषा, शैली, उद्देश्य तथा शीर्षक सम्बन्धी अध्ययन इस प्रकार है।

कथानक :

कथानक से अभिप्राय है – कहानी में व्याप्त घटना । किसी घटना के माध्यम से ही कहानीकार आगे बढ़ता है घटना कितनी बड़ी छोटी है या वह साधन है, सूक्ष्म या विरल ! घटना एकाएक प्रारम्भ हुई है या अपने अंकुरकाल से या फिर अन्त एकाएक हो । ये सब पाठक को एकदम चकित कर देता है । यदि कथा में आदि, मध्य, और अंत सुस्पष्ट हो फिर कहानीकार घटना को महत्वपूर्ण बनाता है या उसके द्वारा वह पात्र आदि को परिचित कराता है । ये सभी प्रश्न शिल्पगत हैं । कथानक को वह नाटकीय भी बना सकता है और विशलेषणात्मक भी । कथा अपने आप आगे बढ़ सकती है और संवादों आदि के माध्यम से

भी । वह घटना तत्व को प्रधानता देकर चरित्र तथा उद्देश्य को गौणता देता है या घटना को इन तत्वों के अधीन बना देता है । वह किस घटना को चुनता है और किसे छोड़ता है '–इन्हीं सब प्रश्नों के उत्तर शिल्प के कोण से कथानक तत्व का अध्ययन है ।

कथानक को 'कथावस्तु' और अंग्रेजी में प्लांट कहते हैं । कथानक तत्व कथा का प्लांट शारीरिक ढांचा है । कथा के पात्रों के जीवन में घटने वाले घटनाक्रम को ही कथानक कहा जाता है घटना व्यापार को कथावस्तु या विषय वस्तु भी कहा जाता है । कथा में घटनाक्रम बहुत अधिक विस्तृत नहीं होती । कथा लेखक एक आध प्रमुख और कुछ अन्य गौण घटनाओं द्वारा अपने कथ्य को पात्रों के माध्यम से आगे बढ़ाता है । कथानक में उत्सुकता जिज्ञासा मनोरंजन बनाए रखकर रचनाकार पाठक को अपने साथ बांधे रखता है । कथानक में नाटकीय के साथ साथ स्वाभविकता और संभाव्यता का होना आवश्यक माना जाता है ।

कहानीकार कथानक का चयन कहीं से भी कर सकता है वस्तुतः लेखक जो कुछ कहानी के माध्यम से कहना चाह रहा है वह उसे अमूर्त करे तभी शिल्प की दृष्टि से सफल कथानक है । वह अपने कथा के पात्रों का चुनाव कहीं से भी कर सकता है । कोई भी जीवन उसके कथानक का हिस्सा बन सकता है । कोई भी काल हो। कोई भी भूखण्ड हो, कथानक का चयन पूर्णतया कहानीकार के हाथ में होता है ।

कहानी में एक ही घटना प्रधान होती है वास्तव में कहानी में कथानक का स्वरूप एक नदी के प्रवाह की भांति होना चाहिए जिस प्रकार नदी अपने साथ कई पदार्थों को समेटे हुए चलती है और अन्त में जाकर ठहर जाती है उसी प्रकार कथानक पात्र, घटनाएं, संवाद आदि

अपने में समेटे हुए अन्त में कलात्मक ढंग से अन्त में जाकर रूक जाए । **डॉ0 लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय** कहानी के कथानक को ह्रास का कारण बताते हैं ।

''नई कहानी में कथानक का ह्रास लक्षित होता है । यह आज की कहानियों में शिल्प की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण विकास है । ठोस व सुसंगठित कथानक देने की प्रवृति प्रेमचन्द, यशपाल आदि पिछले दौर के लेखकों ने अपनाई थी । पर स्वातन्त्र काल में हम जीवन को जटिल से जटिलतर हुआ पाते हैं । विषमताओं से विषमताएं उत्पन्न हुई और प्रत्येक व्यक्ति का अपना स्वत निजत्व का अपना अहम् विकसित हुआ। जिसके कारण कथानक बाह्य घटना के स्थान पर आन्तरिक मनोवृति को अधिक रूपायित करने लगे ।''[1]

कथानक भी दो प्रकार के माने गए हैं –

1. लघु कथानक
2. दीर्घ कथानक

लघु कथानक :

अनायक, मैं वही हूँ, सन्यास–सुख, ओ हरामजादे, प्रेम चिह्न, बीच के बारह बरस, शह में मात, शील और सील, महिमामयी मुन्नी, ये रक्षक, और वे हार गए ।

दीर्घ कथानक :

भार्या, तब, दिवास्वप्न, बायीं हथेली का दर्द, वही दीवार, तुम मत आना ।

परिवेश :

---

1 डॉ0 प्रतिभा कृष्णावल, छायावाद का काव्य शिल्प, पृ0 31

साहित्य समाज का दर्पण है । यह मान्यता बिल्कुल उचित भी है क्योंकि साहित्य में हम उसके काल से सम्बन्धित प्रभावों को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं क्योंकि साहित्य अपने परिवेश से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता । कृति चाहे किसी भी विधा से सम्बन्धित क्यों न हो उस पर युगीन–प्रभाव की झलक स्पष्ट परिलक्षित होती है । जिस प्रकार कृति परिवेश से प्रभावित हुए बिना नहीं रहती उसी प्रकार कृतिकार भी अपने परिवेश से प्रभावित अवश्य होता है । कोई भी घटना किसी समय तथा स्थान पर घटती है यही देश और काल मिलकर वातावरण या पृष्ठभूमि का निर्माण करते हैं । वातावरण की प्रभावपूर्ण सृष्टि कहानी में सहानुभूति और संवेदनशीलता उत्पन्न करने में सफल होती है। कभी कभी संवादों के द्वारा तो कभी घटना क्रम के माध्यम से भी उसके परिवेश का बोध होता है ।

'भार्या' की कहानियाँ भी परिवेश के प्रभाव से अछूती नहीं रही हैं । आज के युग की झलक इन कहानियों में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है । आज का परिवेश टूटते प्रेम संबंधो, टूटते रिश्तों, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, वेश्यावृति, दहेज प्रथा आदि समस्याओं से भरा पड़ा है । और इन सबकी झलक हम **'भार्या'** की कहानियों में देख सकते हैं ।

आधुनिक परिवेश पर धन लोलुपता का प्रभाव सबसे अधिक दिखाई पड़ता है । आदमी हो या और सभी पैसा कमानें में लगे हुए हैं । नगरों में तो हर व्यक्ति धनोपार्जन में इतना व्यस्त है कि उसे अपने पारिवारिक संबंधों के लिए समय नहीं है । 'दिवास्वन', 'भार्या', 'शील और सील', 'बीच के बारह बरस' कहानियों में नर और नारी दोनों को ही समान रूप से धनोपार्जन करते दिखाई देते हैं । आधुनिक युग में समाज की स्थिति भी ऐसी ही हो गई है, जिसमें घर की औरतों को भी धन कमाने के लिए चार दीवारी से बाहर निकलना पड़ रहा है।

आपसी तनाव और बढ़ती दूरियां आधुनिक परिवेश की ही देन कहे जा सकते हैं। **'भार्या'** में शांता और मुकेश के बीच बढ़ती दूरियां **'मैं वहीं हूँ'** में सोन दीदी का आश्रम के लड़कों से दूर हो जाना, **'ओ हरामजादे'** कहानी में मां और बेटे के बीच बढ़ते तनाव को हम आधुनिक परिवेश की बढ़ती तनाव समस्या का ही हिस्सा अंग कहा जा सकता है । आधुनिक परिवेश ही कुछ ऐसा हो गया है जहां आपसी संबंधों की दीवार कमजोर होकर ढहती जा रही है । **'दिवास्वप्न'** में दिवाकर जी का परिवार भी आधुनिक परिवेश के प्रभाव से बच नहीं पाया । उन्हें तथा उनके परिवार पर भी आज के परिवेश की समस्याएं स्पष्ट झलकती दिखाई देती हैं । दिवाकर जी के बड़े बेटे को बैंक में नौकरी मिलने पर और विवाह हो जाने पर, वह अपने माता–पिता के प्रति कर्तव्यों को भूल कर उनसे अलग हो जाता है उसका अपने परिवार के प्रति कर्तव्यहीन होना आज के समाज के युवकों की अकर्तव्य की भावना को दर्शाता है ।

आज के युग को यदि भ्रष्टाचार का युग कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी । आज के समाज में भ्रष्टाचार का बोलबाला है । **'भार्या'** की कहानियों में भ्रष्ट समाज की झलक को **'तब?' 'शह में मात' 'वही दीवार' 'ये रक्षक'** आदि कहानियों में देख सकते हैं । **'वही दीवार'** और **'ये रक्षक'** में भ्रष्ट पुलिसकर्मी एक भक्षक के रूप में नजर आते हैं । वहीं **'तब?'** और **'शह में मात'** में समाज के उन लालची और भ्रष्ट लोगों की झलक है जो अपने स्वार्थपूर्ति के लिए किसी को मारने–काटने से भी नहीं डरते ।

आधुनिक वातावरण में धर्मान्धता बढ़ती जा रही है । धर्म की आड़ में कुकृत्य बढ़ते जा रहे हैं । उसी की झलक कहानी **'सन्यास–सुख'** में देखी जा सकती है । अजय, विजय,

अनिल, रमेश के घर में घुसे साधु के संवादों को पढ़ने पर उसकी ढोंगी प्रवृति उजागर होती है ।

वहीं विजय द्वारा साधु को गृहस्थ बनाकर वापिस भेजने की घटना से युवा समाज की जागृति का बोध होता है । आधुनिक समाज का युवा वर्ग जागरूक है और समझदार भी । रमेश की बचपन की घटना सुनकर और अनिल के कस्बे में बसे साधु की घटना से हमारे समाज में धर्म के नाम पर बढ़ते भ्रष्टाचार की स्थिति उजागर होती है ।

आधुनिक परिवेश में यदि नारी की स्थिति पर ध्यान दिया जाए तो वह मात्र एक उपभोग की वस्तु बन कर रह गई है जिसका पुरूष समाज मन चाहा उपयोग कर रहा दिखाई पड़ता है ।

'भार्या' में पति द्वारा पीड़ित शांता के शब्दों से यह बात स्पष्ट हो जाती है जब शांता कनु से कहती है –

> **"कि यह आदमी उसके चरित्र पर शक करता है । उसे मनचाहे तरीके से जब चाहे इस्तेमाल करना चाहता है । यदि वह मना करती है तो नए–नए लांछन लगाकर मारता पीटता है ।"[2]**

'तुम मत आना' में बढ़ती हुई देह व्यापार की स्थिति को उजागर किया गया है। जिसमें औरतों को देह व्यापार के लिए प्रताड़ित किया जाता है । उस प्रताड़ना का दुःख लिजा द्वारा राजीव को लिखे पत्र में स्पष्ट हो जाता है जिसमें वह राजीव को लिखती है –

---

2 वीरेन्द्र जैन; भार्या, पृष्ठ 16

''यहां आने वाली कोई भी लड़की स्वेच्छा से वह सब करने को कतई तैयार नहीं होती जो उसे यहां आने के बाद ताजिदंगी करना पड़ता है । इसलिए शुरू–शुरू में उसे प्रशिक्षित करने के दौरान इतनी यातनाएं दी जाती हैं कि सुनकर दिल दहल जाता है ।''[3]

आज के वातावरण में एक ओर जहां नारी की दुर्दशा देखने को मिलती है तो दूसरी ओर नारी का सबल रूप भी देखने को मिलता है । आज की नारी पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली सबला भी है । वह अपनी घर गृहस्थी की पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ–साथ आर्थिक जिम्मेदारियों को भी भली भांति निभाती दिखाई देती है ।

'शील और सील' कहानी में दफतर में काम करने वाली मिस मणि मुखर्जी, **'बीच के बारह बरस'** में श्रीमती सत्यवती जी '**प्रेमचिह्न**' की अंजलि **'मैं वही हूँ'** में सोन दीदी **'अनायक'** में पति का बिजनेस संभालती कान्ता **'भार्या'** में पति का भार वहन करती शांता आधुनिक समाज में बढ़ती नारी की भूमिका को प्रदर्शित करती है । वहीं ये आर्थिक रूप से आत्म निर्भर औरतों की सुदृढ़ छवि भी प्रदर्शित करती हैं ।

जहां औरतें एक ओर आत्मनिर्भर बन चुकी हैं । वह पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर चलती है । फिर भी उसे दहेज के लिए प्रताड़ित किया जाता है। उसे मारा–पीटा जाता है उसे जान से मारने की कोशिशें भी की जाती हैं। उसे कई बार तो इस हद तक प्रताड़ित किया जाता है कि उसे अपना घर छोड़ने पर मजबूर होना पड़ता है ।

---

3 वीरेन्द्र जैन; भार्या, पृष्ठ 123

'बायीं हथेली का दर्द' और **'तुम मत आना'** कहानियों में आज के अत्याचारी समाज का चित्रण किया गया है । 'बायीं हथेली का दर्द' में रूपा को ससुराल में दहेज के लिए तरह–तरह की प्रताड़नाएं दी जाती हैं और इसलिए उसे घर छोड़ने पर मजबूर होना पड़ता है ।

इसी प्रकार **'तुम मत आना'** कहानी में लाजवंती ससुराल वालों के अत्याचारों से तंग आकर घर छोड़ देती है । समाज के हर वर्ग तथा परिवेश का चित्रण इन कहानियों में हुआ है वहीं राजनीति जीवन और राजनेताओं की कुटिल चालों की झलक **'और वे हार गये'** कहानी में मिलती है । सांस्कृतिक परिवेश को **'दिवास्वप्न'** में गृह प्रवेश की रस्म में तथा ग्रामीण परिवेश की झलक **'महिमामयी मुन्नी'** में स्पष्ट परिलक्षित होती है ।

जहाँ आधुनिक परिवेश की बुराईयों और समस्याओं का चित्रण है वहीं प्रेम संबंधों और प्रेम विवाह का वर्णन भी इन कहानियों में मिलता है । शांता और मुकेश, अनिल और अजंलि अपन और कांता के प्रेम संबंधों तथा दिवाकर बाबू के पुत्र रमेश के प्रेम विवाह का वर्णन कर कहानीकार ने इन कहानियों में आधुनिक समाज की सम्पूर्ण छवि को अंकित किया है ।

अतः परिवेश और काल की दृष्टि से यदि देखा जाए तो आधुनिक परिवेश की सम्पूर्ण झलक **'भार्या'** की कहानियों में स्पष्ट दिखाई पड़ती है । आधुनिक परिवेश का शायद ही कोई अंश हो जा इन कहानियों में अछूता रहा हो । अतः आधुनिक परिवेश की दृष्टि से सभी कहानियां प्रसांगिक हैं ।

अनिवार्यता के साथ पुनः यह भरोसा देता हुआ कि चरित्र लौट रहे हैं ।''

'भार्या' कहानी संग्रह में कुल सत्रह कहानियां हैं । **'भार्या'** से लेकर **'और वे हार गये'** तक । कहानीकार ने अपनी इन कहानियों में अपने पात्रों की जीवंत उपस्थिति दी है । भार्या के नारी पात्रों में **'बीच के बारह बरस'** में जिस सत्यवती नामक टाइपिस्ट को मूर्त किया है उसके अभिशाप, उसकी वेदना, उसकी प्रतिकूल जीवन स्थितियों और उसकी अदम्य जिजीविषा के साथ, वह पाठक की स्मृती में देर तक टिका रह जाने वाला अनुभव है । सत्यवती अपनी उपस्थिति का एकांकिक एहसास नहीं कराती बल्कि अपने जैसा अभागा जीवन जी रही सैंकड़ों स्त्रियों का प्रतिनिधिक चरित्र भी बनती है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वीरेन्द्र जैन भार्या
   वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज,
   नयी दिल्ली–110002, संस्करण–2008
2. डॉ0 इन्द्र नाथ हिन्दी कहानी, अपनी जबानी,
   राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
3. डॉ0 कृष्ण चन्द्र गुप्त छायावादी कवियों का काव्यादर्शन,
   अनुराधा प्रकाशन, मेरठ ।
4. डॉ0 चमनलाल गुप्ता उपन्यास के सामाजिक कथ्य,
   शारदा प्रकाशन, अंसारी रोड़,दरियागंज,
   नई दिल्ली । संस्करण–1996

5. जवाहर सिंह हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों की शिल्प विधि, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23,दरियागंज, नयी दिल्ली–110002

6. डॉ0 पुष्पा बंसल अन्तराल का शिल्प सप्तसिंधु, मास, संस्करण–1975

7. डॉ0 पुष्पपाल सिंह हिन्दी साहिव्य का आठवां दशक, सूर्य प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–1984

8. डॉ0 प्रेम भटनागर 'हिन्दी उपन्यास शिल्प बदलते परिप्रेक्ष्य' संस्करण–1968

9. डॉ0 मार्तण्ड शर्मा 'हिन्दी शिक्षण' शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, 11, यूनिवर्सिटी रोड़, इलाहाबाद(211002) द्वितीय संस्करण–2008

10. सम्पादक मनोहर लल वीरेन्द्र जैन का साहित्य, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 प्रथम संस्करण–1997

11. रामलखन शुक्ल हिन्दी उपन्यास कला, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली–7, प्रथम संस्करण–1972

12. रमेशकुन्तल मेघ 'अथातो सौन्दर्य जिज्ञासा'
दि मैकमिलन कम्पनी, नई दिल्ली–1973

13. डॉ0 लक्ष्मी नारायण लाल हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास,
साहित्य भवन प्रकाशन, इलाहाबाद,
प्रथम संस्करण–1967

14. डॉ0 शोभा वेरेकर 'साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों का शिल्प विधान'
प्रथम संस्करण–2001

15. डॉ0 शिवशंकर पाण्डेय स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कहानी 'कथ्य और शिल्प'
आलेख प्रकाशन, नवीन शाहदरा,
प्रथम संस्करण–1978

16. डॉ0 सत्यपाल चुघ प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि,
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
प्रथम संस्करण–1968